स्कफ़ी नाम की नाव

गर्ट्रूड क्रैम्पटन
चित्र: टिबोर गेरगेली

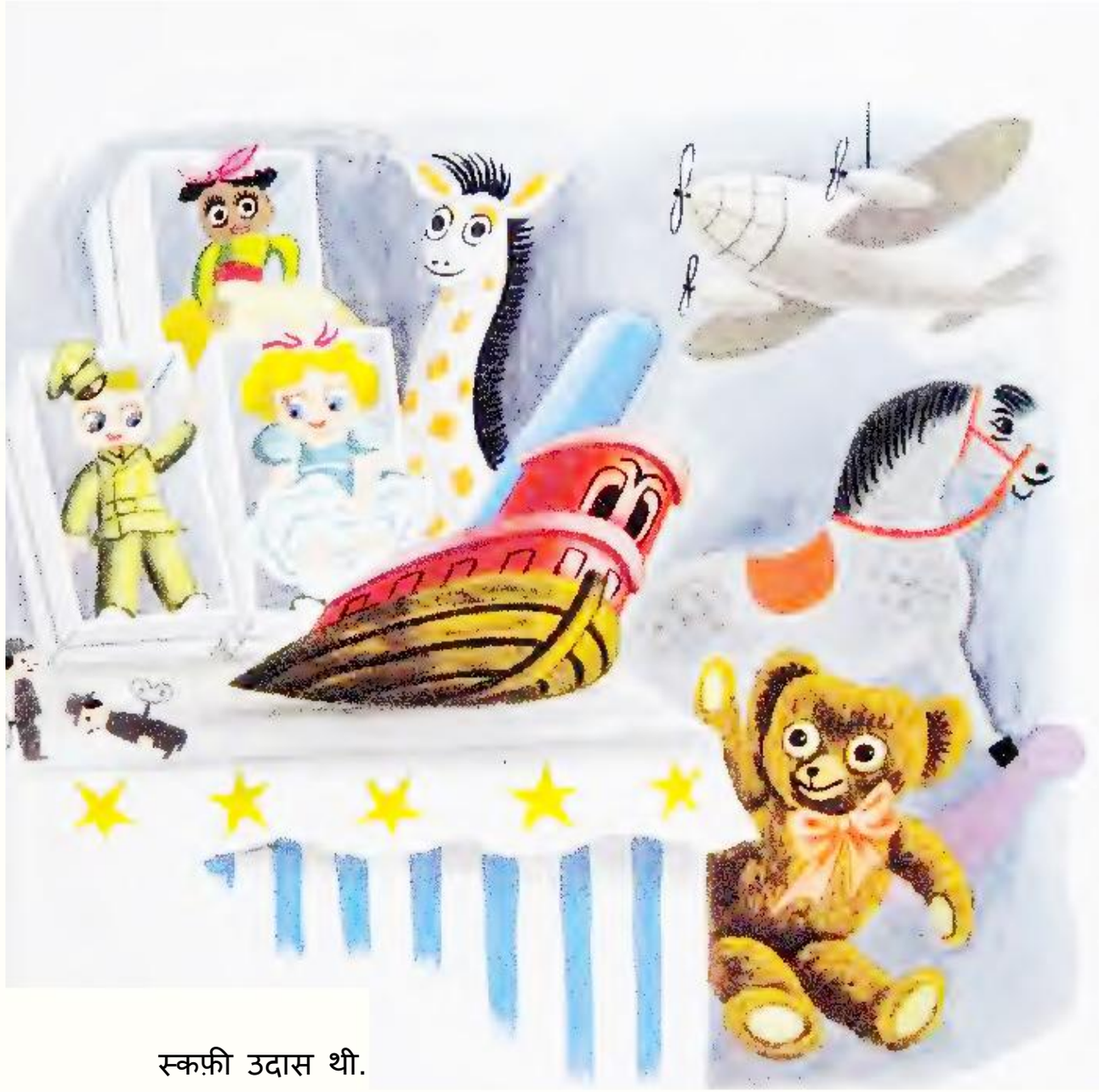

स्कफ़ी उदास थी.

स्कफ़ी गुस्सा थी.

स्कफ़ी ने अपनी धुएं वाली नीली चिमनी सूँघी.

"खिलौनों की दुकान लाल रंग की नाव (टगबोट) के लिए ठीक जगह नहीं है," स्कफ़ी ने कहा और उसने फिर से अपनी धुएं वाली नीली चिमनी सूँघी. "मैं बड़ी चीज़ों के लिए बनी हूं."

"अगर तुम्हें तैरने का मौका मिलता तो शायद तुम इतनी गुस्सा नहीं होतीं," दुकान के मालिक पोल्का डॉट टाई वाले व्यक्ति ने कहा.

इसलिए उस रात दुकान मालिक, स्कफ़ी को अपने छोटे लड़के के पास घर ले गया. उसने बाथटब में पानी भरा.

"पानी पर तैरो, छोटी टगबोट," छोटे लड़के ने कहा

"मैं बाथटब में नहीं तैरूंगी," स्कफ़ी ने कहा. "यह छोटा टब, लाल रंग की टगबोट के तैरने के लिए कोई ठीक जगह नहीं है. मैं बड़ी चीज़ों के लिए बनी हूं."

अगले दिन पोल्का डॉट टाई वाला आदमी और उसका छोटा लड़का स्कफ़ी को पहाड़ियों में से निकलते एक झरने के पास ले गए.

पोल्का डॉट टाई वाला आदमी बोला, "अब तैरो, छोटी टगबोट."

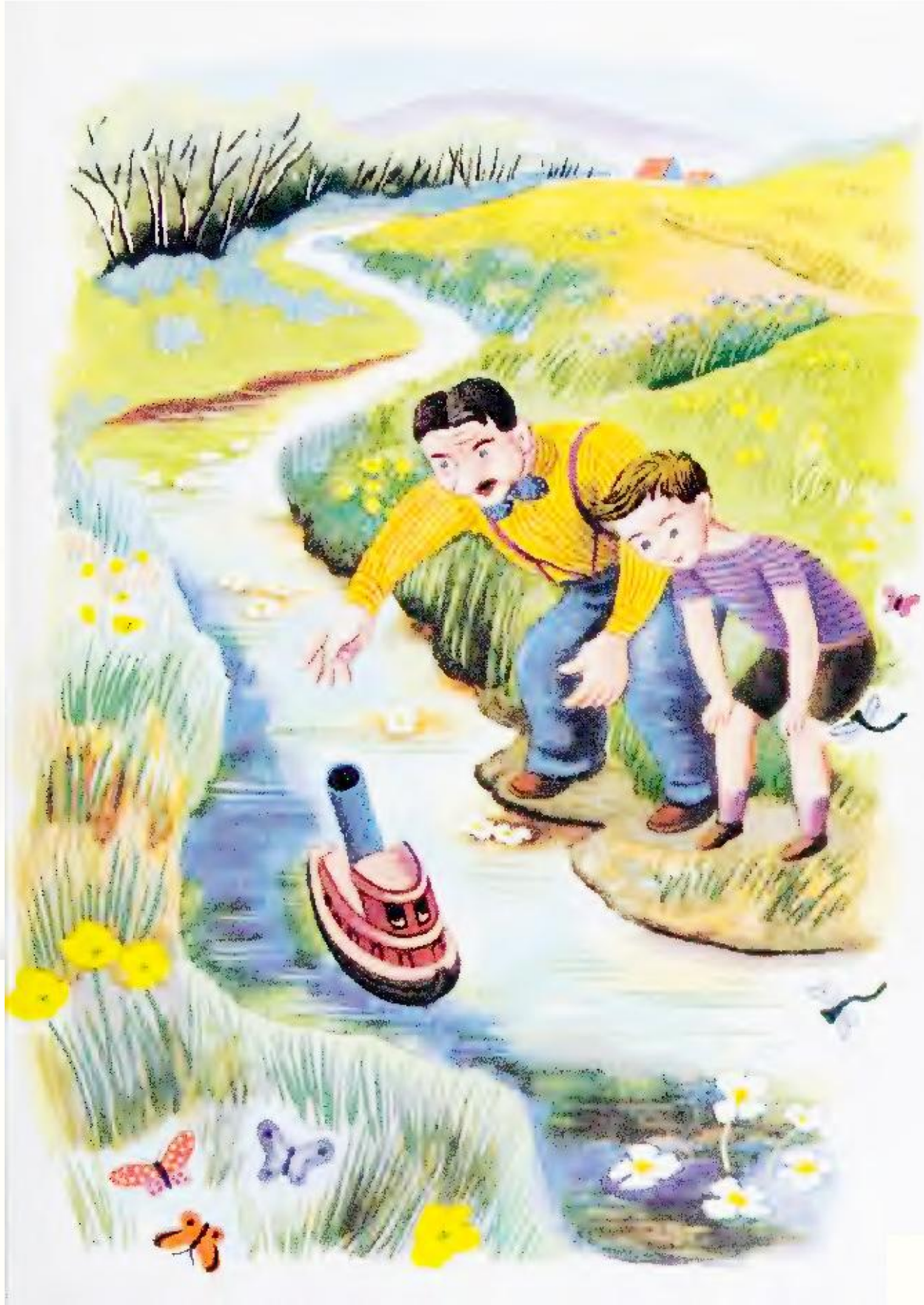

वसंत का मौसम था, और झरना पानी से पूरी तरह भरा हुआ था. पानी तेज़ी से बह रहा था, जैसे वसंत में सभी चीज़ें तेज़ी से बहती हैं.

स्कफ़ी भी जल्दी में थी.

"वापस आओ, छोटी टगबोट, वापस आओ," छोटा लड़का चिल्लाया. अब तेज़ी से बहता हुआ, झरना स्कफ़ी को पहाड़ी के नीचे की ओर ले जा रहा था.

"मैं नहीं रुकूंगी," स्कफ़ी ने कहा, "मैं नहीं रुकूंगी. यही मेरी ज़िंदगी है."

उस पूरे दिन स्कफ़ी धारा के साथ-साथ बहती रही. वो चरागाहों से गुज़री जो फूलों से भरे हुए थे. वो किनारे पर कपड़े धोती महिलाओं से बीच से गुज़री. वो बैंगनी फूलों से भरे छोटे-छोटे जंगलों से गुज़री.

गायें पानी पीने के लिए नाले में आती थीं.

वे ठंडे पानी में खड़ी होती थीं. गायों के पैरों के बीच से तैरना और उनकी नाक से धीरे से टकराना कितना मज़ेदार था.

उन्हें पानी पीते देखना मज़ेदार था.

लेकिन जब एक सफ़ेद और भूरे रंग की गाय ने नाले के ठंडे पानी की बजाए, स्कफ़ी को पीने की कोशिश की, तो स्कफ़ी डर गई.

वो बिल्कुल भी मज़ेदार नहीं था!

रात आई, और उसके साथ चाँद भी.

शांत पेड़ों के अलावा देखने के लिए कुछ भी नहीं था.

अचानक एक उल्लू ने आवाज़ लगाई, "हूट! हूट!"

"टूट, टूट!" भयभीत टगबोट चिल्लाई. टगबोट चाहती थी कि वो पोल्का डॉट टाई वाले आदमी का मुस्कुराता हुआ चेहरा देख सके.

"जब सुबह हुई, तो स्कफ़ी डरने के बजाए गुस्सा थी.

"मैं बड़ी चीज़ों के लिए बनी थी, लेकिन मुझे किस तरफ़ जाना चाहिए?" उसने सोचा. लेकिन जाने का सिर्फ़ एक ही रास्ता बचा था, और वह था बहते पानी के साथ तैरना. वहां दो नाले मिलकर एक छोटी नदी बनाते थे. फिर लाल रंग की टगबोट स्कफ़ी नदी में तैरती हुई आगे बढ़ी.

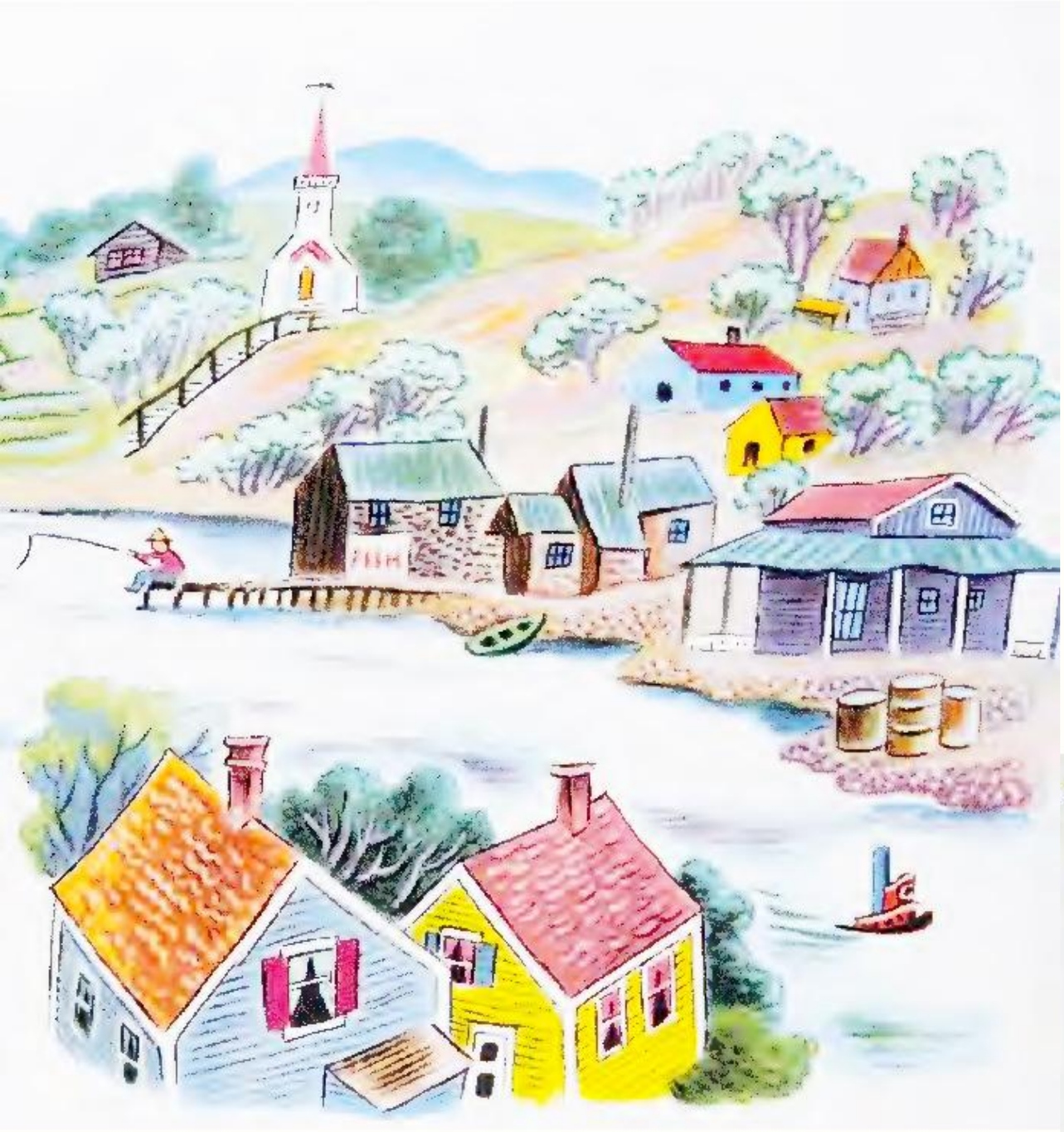

जब वह गाँवों से होकर गुज़री तो उसे गर्व हुआ.

"लोग नदी के किनारे अपने गाँव बनाते हैं," स्कफ़ी ने कहा,
और फिर उसने अपनी धुएं वाली नीली चिमनी को सीधा किया.

एक बार स्कफ़ी की नदी, लकड़ियों से भरी एक छोटी नदी से मिल गई. यहाँ भारी जैकेट और बड़े बूट पहने हुए लोग तैरती हुई लकड़ियों पर चल रहे थे, और उलझी हुई लकड़ियों को छुड़ाने की कोशिश कर रहे थे.

"टूट-टूट! मुझे जाने दो," स्कफ़ी ने माँग की लेकिन लोगों ने उसकी ओर कोई ध्यान नहीं दिया. उन्होंने लकड़ियों को अलग-अलग किया और धकेला ताकि वे नदी के साथ बहकर शहर की आरा मशीन तक पहुँच जाएँ. स्कफ़ी धक्का-मुक्की करती हुई लकड़ियों के साथ-साथ टकराती रही.

"बाप रे!" वह चिल्लाई जब दो लकड़ियाँ आपस में टकराईं.

"यह एक अच्छी नदी है," स्कफ़ी ने कहा, "लेकिन यह नदी मेरे लिए बहुत व्यस्त और बहुत बड़ी है." जब वह पुलों के नीचे से गुज़री तो उसे बहुत गर्व हुआ.

"मेरी नदी इतनी चौड़ी और इतनी गहरी है कि लोगों को उसे पार करने के लिए पुल बनाने होंगे." नदी अब गाँवों के बजाए बड़े शहरों से होकर गुज़र रही थी.

और शहर में नदी पर बने पुल बहुत चौड़े थे - इतने चौड़े कि कई कारें, ट्रक और ट्राम उन्हें एक साथ पार कर सकते थे.

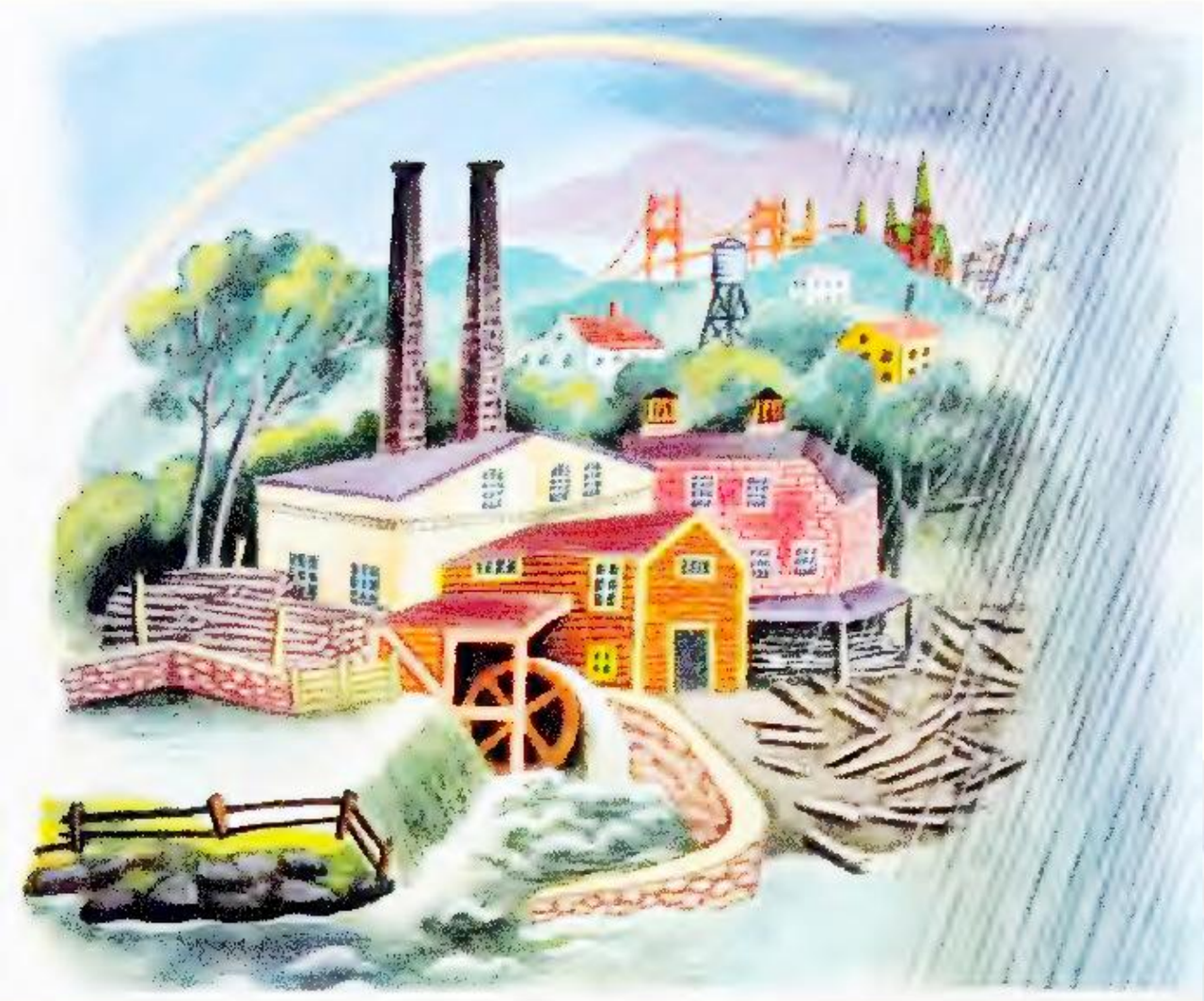

नदी और गहरी होती जा रही थी, इसलिए स्कफ़ी को अब खुद को ऊपर नहीं खींचना पड़ा.

नदी की धार और तेज़ होती जा रही थी.

"मुझे लगता है कि मैं एक टगबोट की बजाय एक ट्रेन हूँ," स्कफ़ी ने कहा, क्योंकि वो बहुत तेज़ी से आगे बढ़ रही थी.

जब वह पानी के पहिये वाली पुरानी आरा मिल के सामने से गुज़री तो उसे बहुत गर्व हुआ.

लेकिन पहाड़ियों पर सर्दियों की बर्फ पिघल रही थी. बहता पानी नालों में भर गया था और वहाँ से वो छोटी नदियों में बह रहा था. वहां से तेजी से बहता हुआ पानी बड़ी नदी की ओर बढ़ रहा था, जहाँ स्कफ़ी तैर रही थी.

"इस नदी में बहुत पानी है," स्कफ़ी ने कहा, जैसे वह लहरों पर उछलती हुई आगे बढ़ी. "जल्द ही पानी मेरे ऊपर से छलकेगा और बाढ़ आ जाएगी!"

जल्द ही खेतों और शहरों को तेज़ पानी की बाढ़ से बचाने के लिए फौज की बड़ी सेना आई.

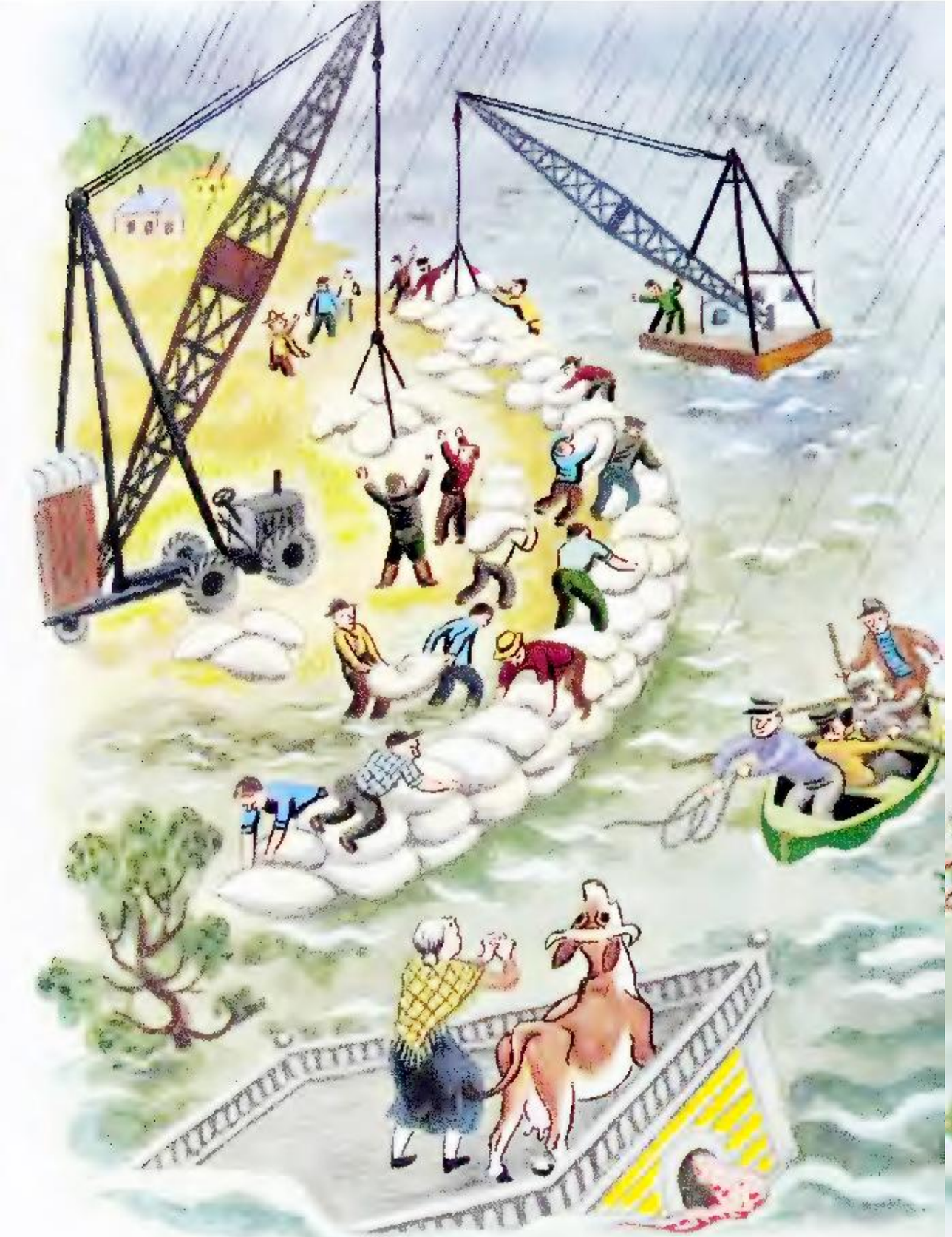

उन्होंने रेत से भरे बोरे, नदी के किनारे रखे.

"फौज के लोग नदी के किनारे ऊंचे कर रहे हैं," स्कफ़ी चिल्लाई, "जिससे पानी ज़मीन पर बहने से रुके."

लेकिन पानी और ऊपर उठता गया.

फौज के लोगों ने रेत के बोरों की दीवार ओर ऊंची की. नदी और ऊपर बही. रेत के बोरों की दीवार और ऊपर हुई.

आखिरकार, पानी का बढ़ना बंद हुआ. बाढ़ का पानी समुद्र की ओर बढ़ गया, और स्कफ़ी बाढ़ के साथ-साथ भागती रही. अब लोग, खेत और शहर सभी सुरक्षित थे.

नदी समुद्र की ओर बढ़ गई. आखिरकार स्कफ़ी एक बड़े शहर में पहुँची. यहाँ नदी चौड़ी हो गई थी और वहां चारों ओर घाट ही घाट थे.

ओह, वो कितनी व्यस्त जगह थी शोरगुल से भरी! क्रेन बड़े जहाजों में माल भरते हुए कराह रही थी. मज़दूर सूटकेस और बक्से जहाज पर लादते हुए चिल्ला रहे थे.

घोड़े अपने पैरों से ताली बजा रहे थे और ट्रक की मोटरें दहाड़ रही थीं, स्ट्रीटकार हॉर्न बजा रही थीं और लोग चिल्ला रहे थे. स्कफ़ी ने कहा, "टूट, टूट!" लेकिन किसी ने उसपर कोई ध्यान नहीं दिया.

"ओह, ओह!" स्कफ़ी चिल्लाई जब उसने समुद्र को देखा. "समुद्र की कोई शुरुआत और कोई अंत नहीं है. काश मैं पोल्का डॉट टाई वाले आदमी और उसके छोटे लड़के को ढूँढ पाती!"

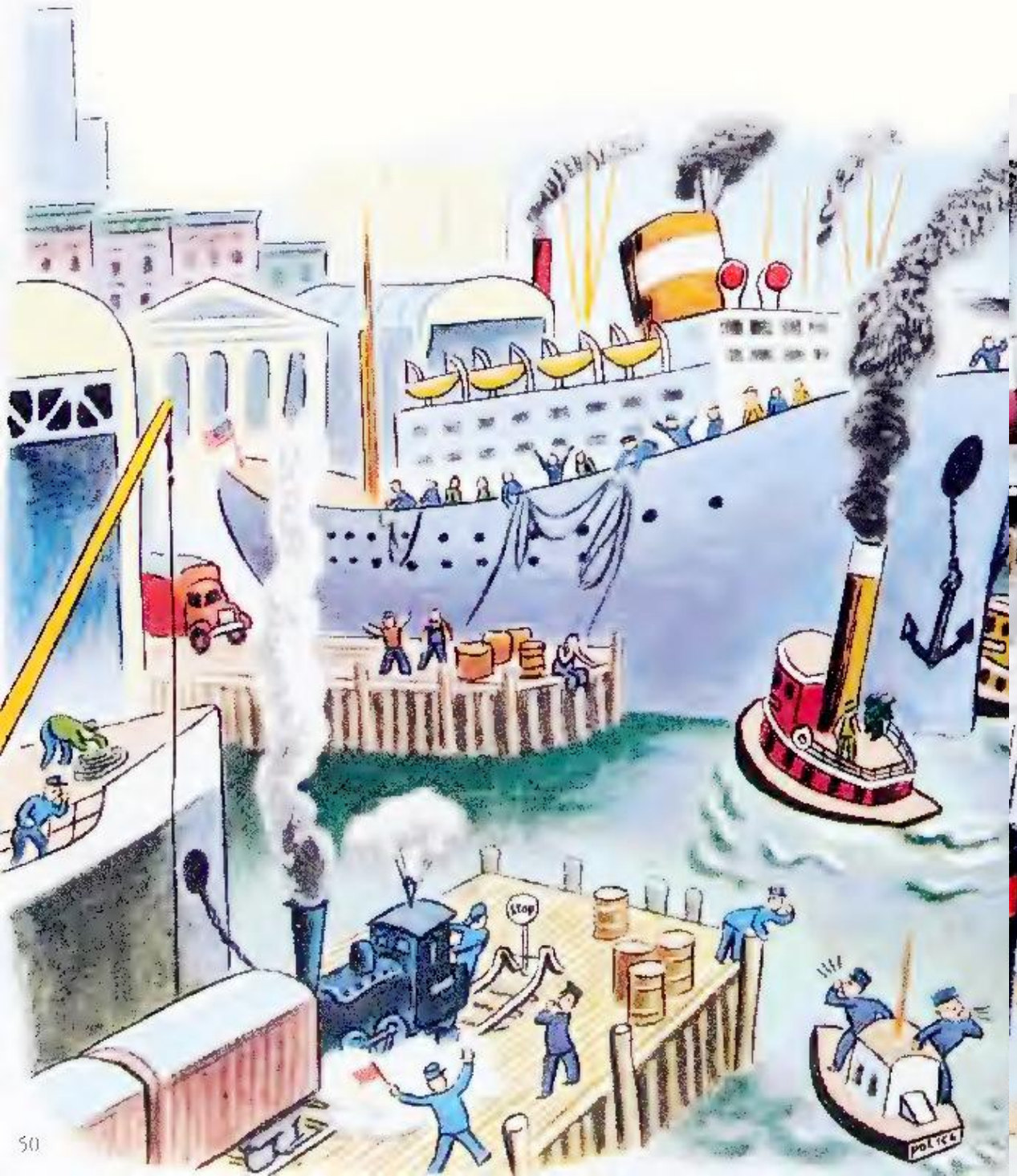

जैसे ही लाल रंग की छोटी टगबोट, ज़मीन के आखिरी टुकड़े से गुज़री, एक हाथ आगे बढ़ा और उसने उसे उठा लिया. और वहाँ वो पोल्का डॉट टाई वाला आदमी था. उसके बगल में उसका छोटा लड़का था.

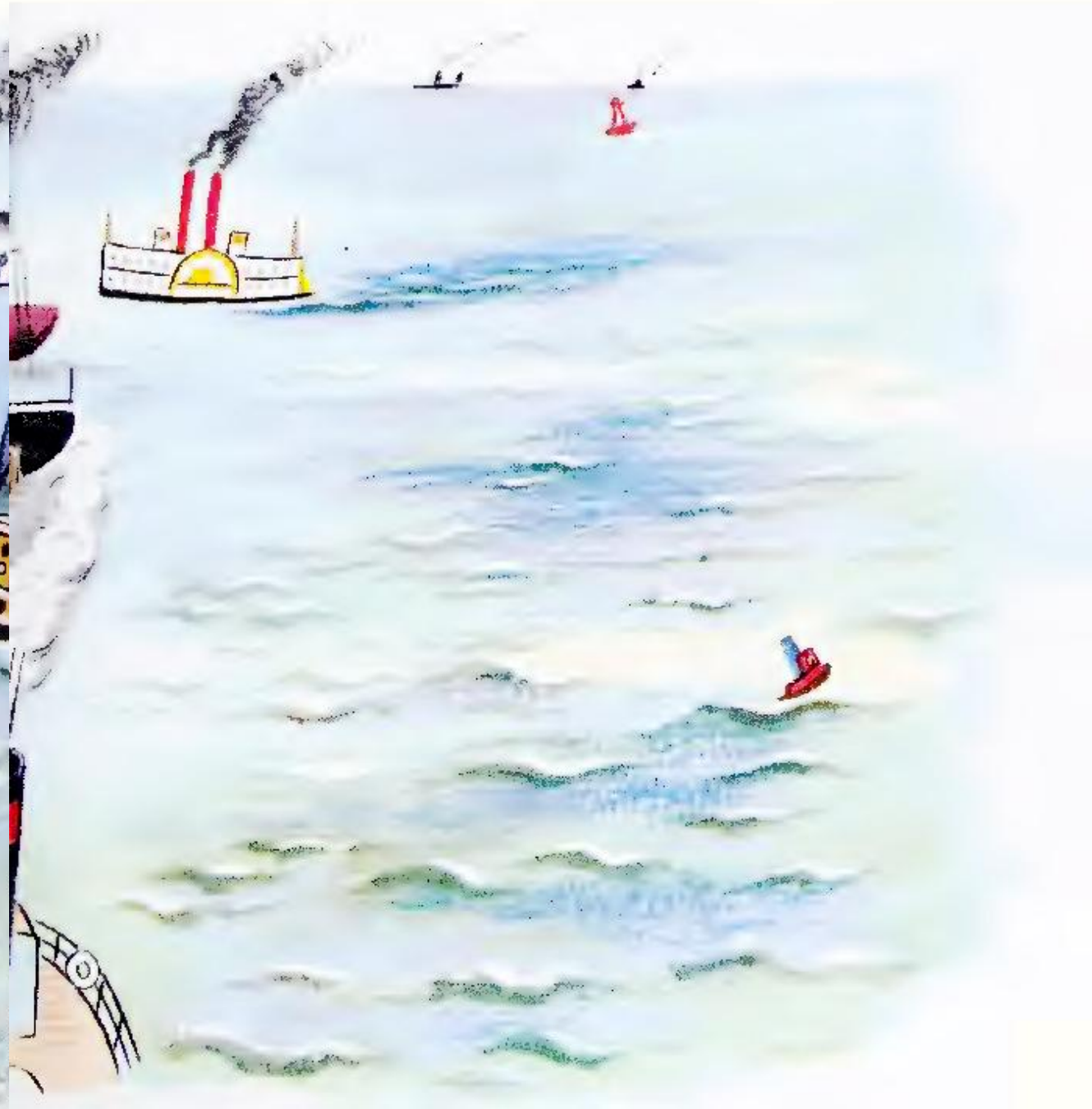

स्कफ़ी अब पोल्का डॉट टाई वाले आदमी और उसके छोटे लड़के के साथ घर पर है.

वह बाथटब में एक छोर से दूसरे छोर तक तैरती है. "यह बाथटब लाल रंग की टगबोट के लिए एकदम सही जगह है," स्कफ़ी ने कहा. "और मेरे लिए यही अच्छी ज़िंदगी है."

अंत